साहित्य और समाज: महिलाओं की बदलती भूमिका

शोध छात्रा:-**अमृता धनंजय कोकाटे-पाटील**

शोध निर्देशक: **- डॉ बाबासाहेब रसूल शेख**

अनुसंधान केंद्र हिंदी विभाग: - प्रो.रामकृष्ण मोरे कला,वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय आकुर्डी, पुणे-44

प्रस्तावना:

" नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में, पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ सदैव ही स्त्री के महत्व और उनके सम्मानित स्थान को दर्शाती हैं। वह कल्याणी, मंगलकारिणी, पथ-प्रदर्शिका नारी श्रद्धेय ही नहीं, साक्षात 'श्रद्धा' का अवतार है। स्नेह, दया, करूणा, क्षमा, त्याग समर्पण, ममता आदि गुणों को अजस्त्र धारा बनी नारी, जो सुख को विस्तृत कर किसी को भी दुखी नहीं देखना चाहती, जो प्रेयसी, पत्नी और माता के रूप में पुरूष की शुष्कता को मिटाकर अपनी आर्द्र कृपा से सिंचित करती है, जो अपने वक्षस्थल पर संसृति के ज्ञान-विज्ञान को एकत्रित कर अपने हाथों में कर्म-कलश लेकर वसुधा को जीवन रस के सार उपकृत करती है, वह नारी पूज्या है। उसके इस स्वरूप को विस्मृत करना अपराध ही नहीं, पाप भी है। नारी इस सृष्टि का अनुपम वरदान है। इस समग्र सृष्टि में जो कुछ सुन्दर है, तरल है, सरल है उसमें नारी का ही योगदान है। अन्तर्ब्रह्म रूप से सौन्दर्य सम्पन्न नारी के बिना विधाता का सृष्टि चक्र अधूरा है। प्राचीन काल में भारत में नारी को इसीलिये शक्ति, ज्ञान और ऐश्वर्य का साहित्य जगत और नारी की भूमिका प्रतीक मान दुर्गा, सरस्वती एवं लक्ष्मी जैसी संज्ञाएँ दी गई। युग एवं परिस्थति के अनुसार नारी की स्थिति एवं भूमिका बदलती रही है। भारतीय साहित्य में नारी को असाधारण स्थान प्रदान किया गया है। हिंदी साहित्य का परिदृश्य उल्लेखनीय रूप से परिवर्तित हो चुका है, जिसमें महिला लेखकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस सदी में महिला लेखक साहित्यिक क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराते हुए विभिन्न मुद्दों पर अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं। उनके लेखन में समाज के ज्वलंत विषय, जैसे लैंगिक भेदभाव, पितृसत्तात्मक संरचना, और महिला सशक्तिकरण प्रमुखता से दिखाई देते हैं। महिला लेखिकाएँ न केवल परंपरागत साहित्यिक रूपों को चुनौती दे रही हैं, बल्कि नई और प्रयोगात्मक लेखन शैली भी अपना रही हैं, जिससे हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और ऊर्जा मिली है। महिला लेखिकाओं ने साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है और उनके विचारों ने सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान अत्यधिक प्रभावशाली और नवाचारी रहा है। इस काल में, लेखिकाओं जैसे गीतांजलि श्री, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, और कृष्णा सोबती ने अपने प्रयोगात्मक लेखन से साहित्य को नया आयाम दिया है। उन्होंने सामाजिक मुद्दों जैसे लिंग समानता, महिला सशक्तिकरण, और शिक्षा के महत्व को अपने लेखन में प्रमुखता से उठाया है। इन लेखिकाओं ने पारंपरिक लेखन ढाँचों को चुनौती दी और नई दृष्टिकोणों और शैलियों का प्रयोग किया है, जिससे हिंदी साहित्य को वैश्विक पहचान मिली है। उनकी रचनाओं में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, व्यक्तिगत संघर्ष, और स्वतंत्रता की खोज को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। इन योगदानों ने न केवल साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन और जागरूकता को भी प्रेरित किया है।

महिला लेखिकाओं की साहित्यिक यात्रा:

हिंदी साहित्य में महिला लेखकों की यात्रा लंबी और संघर्षपूर्ण रही है। स्वतंत्रता के बाद के दशकों में, कुछ महिला लेखिकाएँ जैसे महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, और शिवानी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। महिला लेखिकाएँ समाज के ज्वलंत मुद्दों पर खुलकर लिख रही हैं और अपने अनुभवों, दृष्टिकोणों, और विचारों को साहित्यिक मंच पर प्रस्तुत कर रही हैं।

लेखन शैली और नवाचार:

महिला लेखिकाएँ अपने लेखन में नई और प्रयोगात्मक शैली अपना रही हैं। वे परंपरागत कथानकों से हटकर नई विधाओं और संरचनाओं का प्रयोग कर रही हैं। यह नवाचार हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान कर रहा है। महिला लेखिकाओं का लेखन उनके व्यक्तिगत अनुभवों, समाजिक परिवेश, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होता है, जिससे उनका साहित्यिक कार्य और भी प्रभावी और गहन हो जाता है।

प्रमुख महिला लेखिकाएँ:

प्रमुख महिला लेखकों में वंदना टेटे, एलिसा एक्का,अनामिका, गीतांजलि श्री, मैत्रेयी पुष्पा, और ममता कालिया जैसी लेखिकाएँ शामिल हैं। इन लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है और साहित्य को समृद्ध किया है।

वंदना टेटे:

वंदना टेटे आदिवासी साहित्य की एक महत्वपूर्ण संरक्षक और प्रवर्तक हैं। उन्होंने "आदिवासियत" (Adivasi-ism) की अवधारणा को विकसित किया है, जो आदिवासी विचारधारा और सौंदर्यशास्त्र के मूल तत्वों को प्रस्तुत करती है। टेटे का मानना है कि आदिवासी साहित्यिक परंपराओं की शब्दावली और विश्व दृष्टि ब्राह्मणवादी और औपनिवेशिक धाराओं से बहुत अलग है। उनके अनुसार, आदिवासी विश्व दृष्टि समतावादी है और व्यक्तिकेंद्रित या किसी अन्य रूप की सत्ता संरचना को स्वीकार नहीं करती। टेटे ने न केवल अपने लेखन के माध्यम से आदिवासी विचारधारा को प्रस्तुत किया है, बल्कि उन्होंने एलिस एक्का जैसी पूर्व लेखिकाओं के कार्यों को संरक्षित और प्रकाशित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वंदना टेटे अपने लेखन में आदिवासी समुदायों के भूमि अधिकारों और विस्थापन के मुद्दों को प्रमुखता से उठाती हैं। वे आदिवासी समुदायों के लिए जंगल और प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को रेखांकित करती हैं। टेटे का मानना है कि आदिवासियों के लिए जंगल केवल एक संसाधन नहीं, बल्कि उनका जीवन है। टेटे आदिवासी समुदायों के विस्थापन और उनकी भूमि के अतिक्रमण के खिलाफ आवाज उठाती हैं। वे इन मुद्दों को न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से, बल्कि सामाजिक,सांस्कृतिक और पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य से भी देखती हैं।

एलिस एक्का:

एलिस एक्का को भारतीय आदिवासी साहित्य में एक अग्रणी लेखिका के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म 8 सितंबर 1917 को राँची में हुआ था और वे मुंडा समुदाय से थीं। एक्का न केवल आदिवासी महिला लेखन की प्रारंभिक आवाज थीं, बल्कि वे वर्तमान झारखंड से पहली आदिवासी महिला स्नातक भी थीं। 1938 में कलकत्ता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज से अंग्रेजी में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद, एक्का ने 1950, 1960 और 1970 के दशक में हिंदी में कहानियाँ लिखीं और प्रकाशित कीं। उनकी कहानियाँ मुख्य रूप से साप्ताहिक पत्रिका 'आदिवासी' में प्रकाशित होती थीं। एक्का की कहानियों की विशेषता यह है कि उनमें आदिवासी महिलाएँ मुख्य पात्र होती हैं और वे प्रकृति के साथ उनके संबंधों पर केंद्रित होती हैं। उनकी कहानियाँ आदिवासी समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती हैं, जिनमें दैनिक जीवन, हिंसा, वंचना, प्रेम, निराशा, आशा के साथ-साथ बाहरी लोगों के बढ़ते प्रभाव और आदिवासी भूमि के विनाश का चित्रण भी शामिल है।एलिस एक्का की कहानियाँ आदिवासी समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती हैं, जिनमें दैनिक जीवन, हिंसा, वंचना, प्रेम, निराशा, आशा के साथ-साथ बाहरी लोगों के बढ़ते प्रभाव और आदिवासी भूमि के विनाश का चित्रण भी शामिल है। उनकी कहानी "कोयल की लाड़ली सुमरी" में, एक किशोरी सुमरी के माध्यम से ग्रामीण आदिवासी जीवन की चुनौतियों को दर्शाया गया है। इस कहानी में गरीबी, स्वास्थ्य समस्याओं और यौन हिंसा जैसे मुद्दों को उठाया गया है। एक्का की कहानियाँ आदिवासी समुदायों के सामने आने वाली सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को यथार्थवादी तरीके से चित्रित करती हैं। वे आदिवासी महिलाओं की स्थिति, उनके संघर्ष और समाज में उनकी भूमिका पर विशेष ध्यान देती हैं।

अनामिकाः

अनामिका एक प्रमुख हिंदी कवयित्री और लेखिका हैं। उनकी कविताएँ महिलाओं के अनुभवों और संघर्षों का सजीव चित्रण करती हैं। उनकी कविता संग्रह "टोकरी में दिगंत" को विशेष रूप से सराहा गया है।

गीतांजलि श्रीः

गीतांजलि श्री का उपन्यास प्रेत समधीष आधुनिक भारतीय समाज की जटिलताओं को बखूबी प्रस्तुत करता है। उनका लेखन शैली और विषयवस्तु दोनों में अनूठा है। इनका लेखन आधुनिक समाज की जटिलताओं और महिलाओं की स्थितियों पर आधारित है। उनके उपन्यास "रेत समधी" और "हमारा शहर उस बरस में महिलाओं की जीवन परिस्थितियों और सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है।

मैत्रेयी पुष्पाः

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ और उपन्यास ग्रामीण भारत की महिला जीवन की कठोर सच्चाइयों को उजागर करते हैं। "इदन्नमम" और "चाक" उनके महत्वपूर्ण कार्यों में से हैं। इनकी कहानियाँ और उपन्यास ग्रामीण भारत की महिलाओं के जीवन की कठोर सच्चाइयों को उजागर करते हैं। उनकी रचनाओं में महिलाएँ अपनी पहचान और अस्तित्व की लड़ाई लड़ती

नजर आती हैं। "इदन्नमम" और "चाक" जैसे उपन्यासों में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और पितृसत्तात्मक ढाँचे को चुनौती दी है।

ममता कालियाः

ममता कालिया एक प्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार हैं। उनकी रचनाएँ समाज के विभिन्न वर्गों और स्त्रियों के संघर्षों को प्रस्तुत करती हैं। इनका लेखन सामाजिक संरचनाओं और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं पर आधारित है। उनकी रचनाएँ "बेघर", "दुखमुक्ति", और "एक पत्नी के नोट्स" समाज में महिलाओं की स्थिति और उनकी समस्याओं को उजागर करती हैं।

साहित्य और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान:

हिंदी महिला लेखिकाएँ समाज में व्याप्त विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर खुलकर लिख रही हैं। उनके लेखन में पितृसत्तात्मक समाज, लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, और महिलाधार्मिक और लौकिक दोनों प्रकार के साहित्य में नारी के विविध अंकन उसकी विशिष्टता के द्योतक है। समाज रचना तथा उसके व्यवस्थित विकास में भारतीय नारी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। आदिकाल से ही शास्त्रों में नारी की महत्ता और उसकी गरिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है की नारी ब्रह्म विद्या है, सृष्टि है, शक्ति है, पवित्रता है और वह सब कुछ है, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ रूप से दृष्टिगोचर होता है। वह जन्मदात्री, पालनहार है। मनुस्मृति में कहा गया है-

"पूजाहि गृह दीप्तयः।

स्त्रियः श्रियश्च लोकेशुन विशेशोसस्ति कश्चन।"

किसी भी साहित्य का नारी चित्रण नारी के गुणों-अवगुणों से प्रभावित होता है और तभी वह समाज से साहित्य में भी वही स्थान प्राप्त करती है जो उसे समाज द्वारा प्रदान होता है। नारी का 'चरित्र' उसका विशेष गुण होता है और वही गुण उसको उत्थान व उन्नति के शिखर तक पहुँचाने के लिये स्वतः मुखरित हो उठता है।

चिरकाल में नारी सुकुमारता, कोमलता, विनम्रता, त्याग, समर्पण, कर्तव्यपरायणता की प्रतीक रही है। वैदिककाल में जहाँ नारी एक रत्न थी, वहीं ब्राह्मण काल में नारी भारी अनर्थ की जड़ मानी गयी। उपनिषद काल, पैराणिक काल तथा महाकाव्य काल में नारी के 'पतिव्रत्य धर्मो का उल्लेख प्राप्त होता है। नारी की जहाँ पूजा होती है वहाँ तो देवताओं का निवास-स्थान बताया है- यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।"

हिन्दी साहित्य जगत की ओर दृष्टि करें तो उसमें नारी के अनेकों रूपों का चित्रण हुआ है।

हिन्दी साहित्य के प्रथम काल आदिकाल (वीरगाथा काल) में नारी के वीरांगना एवंम् कामिनी दोनों रूपों के दर्शन होते हैं, किन्तु उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व की छाया कहीं दिखाई नहीं देती। हिन्दी के रासो साहित्य में नारी की ओजस्विता की आरती उतारते हुए यह भी कहा गया है कि पुरूष के सुख-दुख में हाथ बँटाने वाली नारी की निन्दा करना अनुचित है। 'पृथ्वीराज रासो' के अन्त में महाराज पृथ्वीराज के बन्दी होने पर संयोगिता के प्राण त्यागने तथा अन्य रानियों के सती होने का भी प्रशंसापूर्ण वर्णन मिलता है।

दूसरी ओर साहित्यों में नारी जीवन पर विभिन्न लेखकों ने नारी का वर्णन काफी प्रभावी शब्दों में किया है। सामंतवादी युग में नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी। रासो काव्य नायिकाओं के जीवन की दुर्दशा की कहानी भी कहते हैं। तत्कालीन राजदरबारों में रहने वाले कवि नारी के नख-शिख वर्णन में अत्यन्त रूचि लेते थे। प्रेम एवंम् सौन्दर्य के कुशल चितेरे विद्यापति भी युग धर्म से इतने बंधे थे कि उन्होंने रूप चित्रण में नख-शिक्ष वर्णन की परिपाटी का त्याग नहीं किया।

खुसरो के काव्यों में भी नारी के आदर्श रूप को अभिव्यक्ति नहीं मिली है। हिन्दी साहित्य के आदि युग के अन्तर्गत नारी को हेय एवं तुच्छ ही माना गया है तथा नारी प्रेरक शक्ति कम और भोग-विलास की वस्तु ही अधिक रही है।

आधुनिक काल के छायावादी काव्य में नारी को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है, उसे मानव की असीम एवं अमोध शक्ति स्वीकारा गया है। उसे सर्वमंगलमयी, सर्वशक्तिमयी, सृष्टि की अनुपम कृति आदि कहकर उसकी अभ्यर्थना की गई है। महादेवी वर्मा की दृष्टि में भी नारी त्याग, बलिदान, साधना, भक्ति भावना आदि की साकार मूर्ति है और अमोध शक्ति का भण्डार है। इसीलिये तो नारी के सर्वस्वार्पण का चित्र अंकित करते हुए महादेवी वर्मा ने उसे अनन्त शक्ति सम्पन्न भी घोषित किया है, जिससे वह निस्सीम के लिये मिटना भी जानती है और स्वयं मिटकर उस निस्सीम अनन्त शक्तिशाली को अपनी लघु सीमा में बांधने की अमोध शक्ति भी रखती हैं-

"प्राणपिक प्रिय-नाम रे कह !

आधुनिक युग की इस नयी काव्य धारा ने नारी के सौन्दर्य का सूक्ष्म चित्रण किया है। सौन्दर्य में नारी-सौन्दर्य तथ सौन्दर्य के विविध रूपों का वर्णन किया है।

छायावाद की सबसे बड़ी विशेषता है नारी के ब्राह नख-शिख वर्णन से हटकर उसकी अन्तरात्मा की शक्ति पर केन्द्रित करना। जयशंकर प्रसाद तो नव्यतम नारी भावना की कल्पना का आदर्श रखने में सबसे आगे रहे हैं। प्रिया का स्पर्श अलौकिक माधुर्य प्रदान करता है-

"मूँद पलकों में प्रिया के ध्यान को, थाम ले अब हृदय इस आहलाद को, त्रिभुवन की भी तो श्री भर सकती नहीं, प्रेमसी के शून्य-पावन स्थान को।"

महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

निष्कर्ष:

हिंदी साहित्य में महिला लेखकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होने न केवल साहित्य को समृद्ध बनाया है, बल्कि समाज में जागरूकता और परिवर्तन लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी रचनाएँ समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं और एक बेहतर भविष्य।

संदर्भ सूची:

1. शर्मा, स. 21वीं सदी में हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं की भूमिकाः एक समालोचनात्मक अध्ययन साहित्यिक समीक्षा, 2021:15(2) 123-135.

2. सिंह र गीतांजलि श्री के उपन्यासों में महिला पात्रों का सशक्तिकरण" हिंदी साहित्य प्रवाह, 2020 12 (1):45-58.

3.कुमार, प. "मैत्रेयी पुष्पा के कथा लेखन में सामाजिक मुद्दे 3 और महिला अधिकार" आधुनिक साहित्य, 2022:18 (3) 87-101. हिंदी

4.तिवारी, म. (2023). "ममता कालिया की रचनाओं में महिला शिक्षा और समाज पर प्रभाव साहित्यिक चितन, 10(4), 152-165

5. शेख, न (2021) "कृष्णा सोबती का प्रयोगात्मक लेखन और महिलाओं के सामाजिक संघर्ष" साहित्य और समाज, 14(2) 110-123

6. चौधरी ल. (2022). 21वीं सदी की हिंदी महिला लेखिकाओं के प्रयोगात्मक लेखन की प्रवृतियों हिंदी साहित्य संवाद, 18(1), 78-92

7.मध्यकालीन भारतीय साहित्यिक कवि- पृष्ठ सं0 95, 9, 94, 95, 96, 138, 139, 156, डॉ० महेन्द्र कुमार मिश्र 157, 158, 159

8. प्राचीन भारतीय साहित्यिक कवि- पृष्ठ सं०- 57, 144 डॉ० महेन्द्र कुमार मिश्र

9. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि- पृष्ठ सं० 88, डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना

10. सूरसागर सार - पृष्ठ सं०- 123- डॉ० धीरेन्द्र शर्मा

11. सूर संचयन-पृष्ठ सं० 79 डॉ० शर्मा मुंशीराम

12. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि-पृष्ठ सं0- 355, 306, 307 डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना

13 चिओक्केट्टी, ए. (2022). हिंदी आदिवासी साहित्य में एलिस एक्का और प्रामाणिकता का प्रश्न. ओरिएंटलिया सुएकाना, 70, 96-116.

14.कारवाँ मैगज़ीन. (n.d.). आदिवासी साहित्य से दस आवाज़ें. द कारवाँ. https://caravanmagazine.in/books/reading-list-ten-voices-adivasi-literature

15.राजकमल प्रकाशन. (n.d.). एलिस एक्का की कहानियाँ-पेपर बैक. राजकमल प्रकाशन. https://rajkamalprakashan.com/alice-ekka-ki-kahaniyan-paper-back.html

16.टेटे, वं. (संपा.). (2015). एलिस एक्का की कहानियाँ. राधाकृष्ण प्रकाशन.